परमात्म ऊर्जा

पाण्डव भवन को पाण्डवों का किला कहते हैं। किले का गायन भी है। ऐसे ही जो यह ईश्वरीय संगठन है, यह संगठन भी किला ही है। जैसे स्थूल किले को बहुत मजबूत किया जाता है, जिससे कोई भी दुश्मन वार कर न सके। इस रीति से मुख्य किला है संगठन का। इसमें भी इतनी मजबूती हो जो कोई भी विकार दुश्मन के रूप में वार कर न सके। अगर कोई दुश्मन वार कर लेता है तो ज़रूर किले की मजबूती की कमी है। यह तो संगठन रूपी किला है, इसकी मजबूती के लिए तीन बातों की आवश्यकता है। अगर तीनों बातें मजबूत हैं तो इस किले के अन्दर कोई भी रूप से कभी भी कोई दुश्मन वार नहीं कर सकेंगे। दुश्मन प्रवेश भी नहीं कर सकते, हिम्मत नहीं हो सकती। वह तीन बातें कौन-सी हैं, जिससे मजबूत हो सकते हैं? एक- स्नेह, दूसरा- स्वच्छता और तीसरा है रूहानियत। यह तीनों बातें अगर मजबूत हैं तो कब कोई का वार नहीं होगा। अगर कहाँ भी, कोई भी वार करता है, उनका कारण इन तीनों में कोई न कोई कमी है। या स्नेह की कमी है या फिर रूहानियत की कमी है। तो संगठन रूपी किले को मजबूत करने के लिए इन तीन बातों पर बहुत अटेन्शन चाहिए। हरेक स्थान पर इन बातों का फोर्स रखकर भी यह लाना चाहिए। जैसे स्थूल में भी वायुमण्डल को शुद्ध करने के लिए एअर फ्रेश करते हैं। उससे अल्पकाल के लिए वायुमण्डल चेन्ज हो जाता है। इस रीति से इसमें भी इन बातों का प्रेशर डालना चाहिए। जिससे वायुमण्डल का भी असर निकल जाए। कोई को भी आकर्षण करने की मुख्य बातें यही होती हैं। स्नेह से, स्वच्छता से प्रभावित तो हो जाते हैं लेकिन मुख्य तीसरी बात रूहानियत की जो है, यह है मुख्य। दो बातों से प्रभावित होकर गए। यह तो उन्हों के प्रति विशेष वृत्ति और दृष्टि में अटेन्शन रहा। उसकी रिज़ल्ट में यह लेकर के गए। तो जैसे लोगों को भी यह मुख्य बातें आकर्षण करने के लिए निमित्त बनती हैं ना। वैसे एक-दो को संगठन में लाने के लिए व संगठन में शक्ति बढ़ाने के लिए आपस में भी यह तीन बातें एक-दो को देकर के अटेन्शन दिलाने की आवश्यकता है। अगर तीनों में से कोई भी बात की कमज़ोरी है तो ज़रूर कोई न कोई विकनेस है। जो सफलता होनी चाहिए वह नहीं हो पाती, ज़रूर कोई कमी है। तो यह बातें बहुत ध्यान में रखनी हैं।

कथा सरिता

बिना अभ्यास के मंज़िल नहीं

प्राचीन समय में विद्यार्थी गुरूकुल में रहकर ही पढ़ा करते थे। बच्चे को शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरुकुल में भेजा जाता था। बच्चे गुरूकुल में गुरू के सानिध्य में आश्रम की देखभाल किया करते थे और अध्ययन भी किया करते थे।

वरदराज को भी सभी की तरह गुरूकुल भेज दिया गया। वहाँ आश्रम में अपने साथियों के साथ घुलने-मिलने लगे। लेकिन वह पढ़ने में बहुत कमज़ोर थे। गुरू जी की कोई भी बात उनके बहुत कम समझ में आती थी। इस कारण सभी के बीच वह उपहास का कारण बनते।

उनके सारे साथी अगली कक्षा में चले गए लेकिन वो आगे नहीं बढ़ पाये। गुरू जी ने भी आखिर हार मानकर उन्हें बोला, "बेटा वरदराज! मैंने सारे प्रयास करके देख लिए हैं। अब यही उचित होगा कि तुम यहाँ अपना समय बर्बाद मत करो। अपने घर चले जाओ और घरवालों की काम में मदद करो।"

वरदराज ने भी सोचा कि शायद विद्या मेरी किस्मत में नहीं है। और भारी मन से गुरूकुल से घर के लिए निकल गये। दोपहर का समय था। रास्ते में उन्हें प्यास लगने लगी। इधर-उधर देखने पर उन्होंने पाया कि थोड़ी दूर पर ही कुछ महिलाएं कुएं से पानी भर रही थीं। वह कुएं के पास गये। वहाँ पत्थरों पर रस्सी के आने-जाने से निशान बने हुए थे, तो उन्होंने महिलाओं से पूछा, "यह निशान आपने कैसे बनाएं।" तो एक महिला ने जवाब दिया, "बेटे यह निशान हमने नहीं बनाएं। यह तो पानी खींचते समय इस कोमल रस्सी के बार-बार आने-जाने से ठोस पत्थर पर भी ऐसे निशान बन गए हैं।"

वरदराज सोच में पड़ गये। उसने विचार किया कि जब एक कोमल सी रस्सी के बार-बार आने-जाने से एक ठोस पत्थर पर गहरे निशान बन सकते हैं तो निरंतर अभ्यास से मैं विद्या ग्रहण क्यों नहीं कर सकता!

वरदराज ढेर सारे उत्साह के साथ वापस गुरूकुल आये और अथक कड़ी मेहनत की। गुरू जी ने भी खुश होकर भरपूर सहयोग किया। कुछ ही सालों बाद यही मंदबुद्धि बालक वरदराज आगे चलकर संस्कृत व्याकरण के महान विद्वान बने। जिन्होंने लघु सिद्धान्त कौमुदी, मध्यसिद्धान्त कौमुदी, सारसिद्धान्त कौमुदी, गीर्वाणपदमंजरी की रचना की।

शिक्षा : अभ्यास की शक्ति का तो कहना ही क्या है! चाहे वो खेल में हो या पढ़ाई में या किसी और चीज़ में। बिना अभ्यास के आप सफल नहीं हो सकते। इसलिए अभ्यास के साथ धैर्य, परिश्रम और लगन रखकर आप अपनी मंज़िल को पाने के लिए जुट जाएं।

दिल्ली-करोल बाग(पांडव भवन)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा केंद्रीय सरकार आवासीय परिसर,देव नगर करोल बाग क्षेत्र में आयोजित 88 वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब्र.कु. विजय बहन, बहन मनदीप कौर बक्शी,अध्यक्ष,शिरोमणि अकालीदल एवं पूर्व निगम पार्षद, विशेष रवि,विधायक, राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी,डायरेक्टर,ब्रह्माकुमारीज,पांडव भवन, ब्र.कु. रेनू बहन व ब्र.कु दिनेश भाई।

पटना-बुद्धा कॉलोनी(बिहार)। अनिल यादव,वार्ड पार्षद को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मृदुल बहन एवं ब्र.कु. भवानी बहन।

कैथल-हरियाणा। जवाहर नवोदय विद्यालय,तितरम में विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् विद्यालय की प्रिंसिपल सुचिता गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता बहन व ब्र.कु. भगवान भाई।

दिल्ली-पीतमपुरा। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर आयोजित शिव जयंती महोत्सव में ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, ब्र.कु. रानी दीदी, ब्र.कु. प्रभा दीदी, ब्र.कु. सुनीता दीदी, ब्र.कु. उषा गोयल सहित पीतमपुरा एवं शक्तिनगर सेवाकेंद्र के अनेक भाई-बहनें उपस्थित रहे।

भरतपुर-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में भरतपुर प्रशासन एवं महिला अधिकारिता विभाग की ओर से अध्यात्म के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजयोगिनी ब्र.कु. कविता दीदी,आगरा सबजोन सह प्रभारी,भरतपुर सेवाकेंद्र प्रभारी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए श्वेता यादव,अति. जिला कलेक्टर। साथ हैं श्रीमती अर्चना पिप्पल,उपनिदेशक महिला एवं बालविकास विभाग परियोजना अधिकारी, राजेश कुमार,उपनिदेशक महिला अधिकारिता विभाग तथा अन्य।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा स्वास्थ्य सप्ताह के अंतर्गत कमल पब्लिक स्कूल में 'मेरा स्वास्थ्य मेरा अधिकार' थीम के अंतर्गत आयोजित कार्यशाला में ब्र.कु. श्वेता बहन, ब्र.कु. दिनेश भाई, ब्र.कु. गजेन्द्र भाई एवं ब्र.कु. वन्दना बहन ने बच्चों का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर प्रबंधक कमल गुप्ता, प्रधानाचार्या मेनका गुप्ता, कामिनी शर्मा, शशि प्रभा, ज्योति शर्मा, रीना कश्यप, प्रीति यादव, कनिष्का पचौरी, शर्मिष्ठा जी आदि शिक्षकगण उपस्थित रहे।

रामपुर बुशहर-शिमला(हि.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् श्रेष्ठ प्रतिज्ञा करते हुए तहसीलदार जयचंद सोनी, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. कृष्णा बहन, ब्र.कु. डोलमा बहन, ब्र.कु. सावित्री बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. चरण सिंह भाई तथा अन्य।